ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
March 2024 : 1(2)22-25
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

खुशबू कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता में 'कवि' पत्रिका का योगदान

पत्रकारिता एक व्यापक शब्द है जिसके अंतर्गत बहुत सारी बातें शामिल होती हैं जिसमें समाज, मनुष्य, सूचना, विचार और तर्क का एक समन्वय होता है। डॉ संजीव भानावत पत्रकारिता के इस रूप को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं-"आज पत्रकारिता सूचनाओं और समाचारों का संकलन मात्र न होकर मानव जीवन के व्यापक परिदृश्य को अपने में समेटे हुए है। वह शाश्वत नैतिक, सांस्कृतिक मूल्यों को सामाजिक घटनाक्रम की कसौटी पर कसने का साधन बन गई है। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-संस्कृति, आशा- निराशा, संघर्ष-क्रांति, जय-पराजय, उत्थान-पतन आदि जीवन की विभिन्न भावों की मनोहारी एवं यथार्थ छवि हम युगीन पत्रकारिता के दर्पण में देख सकते हैं।"[1]

साहित्य की भांति पत्रकारिता भी समाज की विविध गतिविधियों का दर्पण है। सम सामयिक घटनाचक्र का शीघ्रता में लिखा गया इतिहास पत्रकारिता कहलाता है। साहित्यिक पत्रकारिता को मुख्य रूप से: समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक विकाश से जोड़ कर देखा जाता है। प्रो. रमा अपनी पुस्तक हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता में साहित्यिक पत्रकारिता को स्पष्ट करती हुए लिखती हैं- "साहित्यिक पत्रकारिता का उद्देश्य केवल सामाजिक साहित्य को जनता तक पहुंचाना ही नहीं, बल्कि हिंदी भाषा की वर्तनी और शुद्धता के प्रति प्रतिबद्धता भी है।"[2]

आज पत्रकारिता अपने विभिन्न रूपों के साथ हमारे समक्ष उपस्थित है। ये विभिन्न रूप सिर्फ कलेवर में ही नहीं बल्कि माध्यमों में भी दिखाई देते हैं। आज जरूरी नहीं है की कोई सिर्फ अखबार और पत्रिका ही पढ़े। उसके पास टीवी से लेकर मोबाइल तक उपलब्ध हैं जो हर तरह की खबरों से भरे हुए हैं। यानी की हम चुन

Corresponding Author :
खुशबू कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी

सकते है कि हमें राजनीतिक या साहित्यिक जानकारी लेनी है और पत्रिका या फिर मोबाइल में उपलब्ध वीडियो देखनी है। इसके फायदे भी हैं। आज अगर हमे जनमानस तक कोई बात पहुंचानी हो तो वो पहले की अपेक्षा अधिक आसानी से पहुंचाई जा सकती है। ऐसे बहुत से मुद्दे हैं, जिनसे पहले जनता का संबंध नहीं था परंतु आज जनता उन विषयों को लेकर जागरूक है। जैसे देश विदेश के राजनीतिक समीकरणों आर्थिक नक्कबंदी अथवा साझा बजार आदि की ओर भी पत्रकारों ने जनता का ध्यान आकर्षित करना प्रारंभ किया है।

भारत में पत्रकारिता की शुरुआत सन् 1780 ई में प्रकाशित 'बंगाल गजट' नाम के अंग्रेजी पत्र के माध्यम से होती है। जिसके संपादक जेम्स ऑगस्ट हिक्की थे। इसके पश्चात अन्य भरतीय शहरों में भी पत्रों का प्रकाशन शुरू हुआ। जैसे सन् 1789 में बंबई से 'बॉम्बे हेराल्ड' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होने लगा।

हिंदी का पहला पत्र उदंत मार्तण्ड (1826) जिसके संपादक कानपुर निवासी पंडित युगल किशोर थे। अपने पहले अंक से अपने विचारों को लेकर कितना सजग था। ये उसके मुखपृष्ठ पर अंकित श्लोक से भलीभांति प्रदर्शित होता है -

युगल किशोरः कथयाति धीरः सविनयमेतत् सुकुलजवंशः।

उदिते दिनकृत सति मार्तंडे विलसती लोक उदंते।[3]

1868 में भारतेंदु ने पत्रकारिता की शुरुआत 'कवि वचन सुधा' के प्रकाशन से किया। इसके पश्चात हिंदी पत्रकारिता ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। भारतेंदु के आने से इसकी प्रगति ने रफ्तार पकड़ी। और साथ ही इसका मान भी बढ़ा। इस पत्र की प्रसिद्धि के बारे में राधाकृष्णदादास ने लिखा है- "कविवचन सुधा' का आदर सर्वसाधारण में बढ़ता गया और इसके लेख ऐसे होते थे कि यद्यपि हिन्दी भाषा के प्रेमी उस समय गिने हुए थे तथापि लोग चातक की भाँति टकटकी लगाए रहते थे और हाथों हाथ सब बंट जाता था"[3] नागरी नीरद (1883), साहित्य सुधानिधि (1894),(हिन्दी प्रर्दिप), भारतेन्दु (हरिश्चन्द्र मैगजीन), प्रतापनारायण मिश्र (ब्राह्मण) महावीर प्रसाद द्विवेदी (सरस्वती), गणेशशंकर विद्यार्थी (प्रताप), दशरथ प्रसाद द्विवेदी (स्वदेश) तथा 'कवि' सदृश पत्रों का हिन्दी पत्रिकारिता में विशेष महत्व है।

हिंदी में कई ऐसी पत्रिकाएं हुई जिन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में अपनी भूमिका का निर्वाह अत्यंत ही सुंदर ढंग से किया। हिंदी के अनेक साहित्यकारों के द्वारा स्वाधीनता आंदोलन के दौरान पत्र पत्रिकाओं का संपादन और प्रकाशन किया गया। जिनका पत्र पत्रिकाओं के प्रशासन और संपादन के इतिहास के अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान है। भारतेंदु हरिश्चंद्र और उनके मंडल के कई साहित्यकारों ने पत्रिकाओं का प्रकाश और संपादन क्या किया तथा पराधीनता के कालखंड, शोषण और निराशा के वातावरण में भारत की आम जनता को संगठित, सचेत और मुक्तिकामी बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। बालकों को संस्कारी, नैतिक और जिम्मेदार मनुष्य बनाना, स्त्रियों की दारुण दशा का चित्रण करना और उसके सुधार के लिए प्रयास करना, गुलामी की भावना का परित्याग कर स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की भावना को बढ़ाना, स्वदेशी के भाव को प्रबल करना, हिंदी भाषा के विकास और विस्तार के आंदोलन को गति प्रदान करना हिंदी के प्रारंभिक पत्र पत्रिकाओं के महत्वपूर्ण विषय और वैशिष्ट्य रहे हैं। 'कवि' पत्रिका उपरोक्त विशेषताओं के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली हिंदी की एक साहित्यिक पत्रिका है।

'कवि' भारतेंदु युग में प्रकाशित एक मासिक काव्य पत्रिका थी। इसका प्रकाशन गोरखपुर मंडल के तिघरा गांव से, रूपनारायन सिंह 'रूप' के संपादन में संवत् 1976 में हुआ था। कवि पत्रिका ने अपने समय तथा समाज दोनों के अनुकूल काव्य रचना में समुचित योगदान दिया है। 'कवि' के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए 'रूप नारायन सिंह' ने पहले अंक के संपादकीय में लिखा है- "आप से यह निवेदन करने की आवश्यकता नहीं की एक ऐसे पत्र की, जिस में केवल काव्य-चरचा ही रहे अत्यंत आवश्यकता है। क्योंकि अब से पहले जितने पत्र गिरते पड़ते मन्थर-गति से इस मार्ग में अग्रसर थे, वे ठंडे हो चुके हैं। प्राचीन प्रणाली और नवीन ढंग के काव्य-रचयिता एक दूसरे से बहुत दूर जा पड़े हैं। कितने ही नवोत्साही छन्दो-नियम और काव्य-रीति से अभिज्ञता प्राप्त करने के लिए लालायित है। इस विषय विषय में पहला उद्योग,जहाँ तक ज्ञात है, वर्त्तमान हिन्दी के जन्मदाता, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी ने कवि-वन्चन-सुधा निकाल कर

किया आज जब हिन्दी की दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नत्ति हो रही है, कविता-विषयक एक पत्र का भी न होना अवश्य खेदजनक है।"[4]

राष्ट्रभाषा का प्रचार, स्वाधीनता की कामना और उसका स्वागत, समस्या पूर्ति, पुराने ढंग की कविताएं, नवीन भवबोध की कविताएं, सांस्कृतिक चेतना, भक्ति और रीति संबंधी कविताएं 'कवि' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री की सामान्य विशेषताएं हैं। इस पत्रिका ने भारतेंदु युग की अन्य पत्रिकाओं की तरह राष्ट्र भक्ति को सर्वोपरि रखा। प्रकाशित रचनाओं में मुख्य रूप से उन रचनाओं को महत्व दिया जाता था, जिनमें देश सेवा का भाव हो। देश विरोधी रचना के लिए इसमें कोई स्थान नहीं था।

'कवि' की समस्यपूर्तियां स्वाधीनता आंदोलन की भावना से ओत प्रोत होती थी। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं...

भारतवासी सुनो कान दै जितने तुम भारत-सन्तान।
धीरज धरो न छोड़ो आशा तुम होगे सब से बलवान ॥
ध्रुष प्रहलाद सत्य तप बल से हुए जगत में यशी महान।
छोड़ो नहीं लगन तुम अपनी सुध अवश्य देंगे भगवान।[5]

भारतेंदु युग का समय स्वाधीनता आंदोलन का समय था। हर कवि साहित्यकार अपने देश के लिए हर सफल प्रयास कर रहा था। इस कविता में भी कवि 'श्री विश्वनाथ प्रसाद' अतीत के गौरव की याद दिलाते हुए, भारतवासियों को तत्कालीन समस्याओं से लड़ने और धीरज धरने की बात करते हैं।

कविता एक ऐसा माध्यम है जिसकी पहुंच ज्यादा दूर तक होती है। 'कवि' के संपादक इस बात को अच्छे से समझते थे इसलिए इस पत्रिका को एक काव्य पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया। इसके कवि और लेखक अपनी बात कहने में हिचकते नहीं थे। धार्मिक आडंबर जो की समाज को खोखला कर रहा था, उसके संदर्भ में प्रकाशित कविता यह दर्शाती है की इसका रचनाकार, देश और देश वासियों की प्रगति का वाहक है।

"मन्दिर में कोई मस्जिद में कुछ गिरजा में सिर डाले हैं।
लड़ने हैं खूब झगड़ते हैं अड़ते हठ पर अड़वाले हैं ॥
सब पीके माहमयो मदिरा रह सकें न पैर सभाले हैं।
क्या जाते क्या २ बक़ते हैं मुश्किल से टलते टाले हैं ॥
हूं नारायण मैं अचरज में तेरे भी खेल निराले हैं।।[6]
अब रहे कहाँ सत वाले हैं सब मत बाले मतवाले हैं ॥"[7]

देश की स्थिति ठीक नहीं थी सभी अंग्रेजों के अत्याचार से त्रस्त थे। क्रांतिकारियों तथा पत्रकारों को काम करने से रोका जा रहा था। ऐसी स्थिति में भी इन कवियों तथा पत्रकारों ने जनता को जागृत करने का बीड़ा उठाया। 'बाबू बेचेलाल सरोज' ने मनुष्य की उस दृढ़ इच्छाशक्ति का वर्णन किया है जो अगर किसी में हो तो वह कुछ भी कर सकता है...

नहीं छोड़ते आदत अपनी जो जैसी लत बाले हैं।
झूठे झूठ नहीं तजते, त्यों सत्य नहीं सत वाले हैं।
हिम्मत नहीं हारते अपनी जितने हिम्मत घाले हैं।
अपने अपने मत के मद में सभी यहाँ मतवाले हैं ॥[8]

स्वदेशी का प्रयोग भारतेंदु द्वारा शुरू की गई एक मुहिम थी। जिसमें स्वदेशी भाषा का प्रयोग सबसे अहम था। ' श्रीयूत गोकुल प्रसाद वर्मा' ने अपनी कविता में में इस बात का वर्णन किया है की स्वदेशी भाषा का प्रयोग कितना आवश्यक है। अपनी कविता में कवि हिंदी भाषा की महता बताने के साथ ही देवनगरी लिपि को सभी लिपियों में श्रेष्ठ बताते हैं.....

गुन गरबीली रंगी रसीली कभी न करे निरामा है।

लखत जाहि उजियारी लजती ऐसी हिन्दी भाषा है ॥
लिपी नागरी के सन्मुख क्या हो कोइ खेल तमासा है।
जग की सब लिपियों की सचमुच देव नागरी नासा है।
भारत की सब बस्तु अनोखी सब के रङ्ग निराले हैं- देश० ॥[9]

'कवि' ने समाज के साथ ही साहित्य और साहित्यिक भाषा शैली को भी समृद्ध किया है। इस पत्रिका में काव्य शैलियों को बहुत महता दी गई है। इसके प्रत्येक अंक में समस्यपूर्तियों तथा पुराने कवियों की कविताओं को विशेष रूप से प्रकाशित किया जाता था। संपादक ने जैसा अपने वक्तव्य में कहा है, नए कवियों को काव्य की भाषा, शैली सबकुछ सीखने की जरूरत थी। कवि ने अपने हर अंक में किसी न किसी रीतिकालीन कवि की कविता को प्रकाशित किया जिससे नए कवियों को सीखने का मौका मिले। इसी का नतीजा था की 'कवि' में पुरानी शैलियों की समस्या पूर्तियों की संख्या सबसे अधिक होती थी। 'गया प्रसाद शुक्ल सनेही' की ये समस्या पूर्ति उल्लेखनीय है…

पाते हैं सुवर्ण तो लगाते हैं गले से उसे,
ध्वनि में है मस्त पद धरतें सँभाले हैं ॥
उड़ते हैं मन बन बनके विहँग बाँके।
अड़ते कभी तो फिर टलते न टाले हैं ॥
दिलके फफोले फोड़ते हैं खुल खुल खूब।
द्रोही दबते हैं दाँत दूर से निकाले हैं ॥
रङ्ग हैं निराले पाले रसके पड़े हैं दोनों।
कवि और प्रेमी बे-पिये ही मतवाले है॥[10]

बाल विवाह, सामाजिक भेद भाव, देश में किसानों की दशा आदि कवि पत्रिका के महत्वपूर्ण विषयवस्तु थी। इसप्रकार कवि पत्रिका की तत्कालीन समाज और साहित्य में योगदान को देखते हुए हम कह सकते हैं। की 'कवि' एक महत्वपूर्ण पत्रिका है जिसने साहित्यिक पत्रिका को समृद्ध बनाया है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. संजीव भानावत, पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, रचना प्रकाशन, जयपुर, 1992 पृ.52-53
2. प्रो. रमा, हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता, नई किताब प्रकाशन दिल्ली, 2021, भूमिका पृ. 7
3. डॉ. सुनीता, साहित्यिक पत्रकारिता और मर्यादा, साहित्य संचय प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृ. 13-14
4. रूप नारायणन सिंह 'रूप' (संपादक), कवि, प्रथम अंक, 1976 भाद्रपद , पृ. 14
5. वही, पृ. 21
6. रूप नारायणन सिंह 'रूप' (संपादक), कवि, द्वितीय अंक, 1976 आश्विन, पृ. 32
7. वही, पृ. 21
8. रूप नारायणन सिंह 'रूप' (संपादक), कवि, द्वितीय अंक, 1976 आश्विन, पृ.24
9. वही, पृ. 23
10. वही, पृ.19